प्रस्तुतकत्री- डॉ. गायत्री सिंह (अतिथि प्राध्यापिका)

हिन्दी-विभाग, आर. डी. एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर।

स्नातक (प्रतिष्ठा), खण्ड-I (General & Subsidiary)

जायसी कृत 'नागमती-वियोग वर्णन' से कुछ महत्वपूर्ण व्यख्याएँ-

1.भई पुछार,लीन्ह वनवासू।.....तरिव होई निपात।

व्याख्या : प्रस्तुत व्याख्यात्मक पंक्ति जायसी कृत 'नागमती वियोग वर्णन' से उद्धृत है। नागमती अब विरह- व्याकुल होकर मोरनी बनी हुई वन-वन मारी-मारी फिरती है। उसकी सौत में अपने जाल में फाँस लिया है। वह काग से कहती है कि यदि मेरा प्रियतम आ रहा हो तो तुम उड़ जाओ। मैं प्रियतम का पथ देखते -देखते हार गई हूँ, अब किस पक्षी को प्रियतम के पास संदेश लेकर भेजूँ।

वह पंडुक पक्षी से कहती है कि प्रियतम से जाकर कह दो कि उनके हृदय में मेरे प्रति रोष है तो फिर मेरे लिए स्थान ही कहाँ है? वह कंठ-लंबे पक्षी से कहती है कि तुम तो गले लगाने वाले हो, अब तुम ही प्रियतम के कंठ से मुझे लगा दो। वह गौरेया से कहती है कि तुम्हारा गौरव तभी है जब तुम प्रियतम से मेरा मिलन करा दो। नागमती कहती

है कि मैं प्रिय को पुकार-पुकार कर काली हो गई हूँ। ग्वालिन चिड़िया की दही-दही लेने की आवाज भी मुझे जलाती है। वह मैना, नीलकंठ तथा जलहंस से कहती है कि अब तो उसे प्रियतम से मिला दे।

नागमती की विरहा ज्वाला इतनी प्रचण्ड है कि जिस पक्षी से भी वह विरह की बात करती है वह पक्षी जल जाता है और जिस पेड़ पर बैठा होता है वह पत्तों से हीन हो जाता है।

2. कुहुकि-कुहुकि जस कोइल रोई।.....जेहि सुनि आवै कंत।।

व्याख्या : प्रस्तुत व्याख्यात्मक पंक्ति जायसी कृत 'नागमती वियोग वर्णन' से उद्धृत है। जिस प्रकार कोयल कूकती फिरती है, उसी प्रकार वन-वन में नागमती रोती हुई फिर रही है। उसके नेत्रों से रक्त के आँसू गिर-गिर कर पृथ्वी पर गुँजाओं को बोते जा रहे हैं। रोते-रोते होकर उसका मुख काला पड़ गया है, उसके नेत्र लाल पड़ गए हैं। वह विरहा के दुःख में जल रही है, ऐसा कौन है जो उसको शीतलता प्रदान करें। वन में जहाँ भी नागमती जाती हैं, उसके अश्रुओं का ढेर लग जाता है।

नागमती के विरह-दुख के प्रभाव से पलाश के वृक्ष भी पत्तों से हीन हो गए हैं और लाल लाल फूलों के रूप में वे मानो रक्त में डूब कर लाल हो उठे। जहाँ भी दृष्टि जाती है, वहीं नागमती के आश्रुओं रक्तिम छाया दिखाई पड़ती है। जहाँ नागमती का प्रिय रतनसेन है, वहाँ की बात कौन करे। ऐसा लगता है, उस देश में न बर्षा है न हेमन्त और न ही

बसन्त ऋतुएँ ही आती है। न वहाँ कोयल और चातक ही हैं, जिनकी पुकार को सुनकर प्रियतम को मेरी याद आ जाए।

3. रोइ गंवाए बारह मासा.....बूझै निसरी पंखि।।

व्याख्या : प्रस्तुत व्याख्यात्मक पंक्ति जायसी के महाकाव्य पद्मावत से नागमती-वियोग से ली गई है। इस पंक्ति के आधार पर जायसी ने नागमती का वियोग, विरह एवं व्याकुलता को चित्रित किया है। नागमती ने रो-रोकर वर्ष के बारह महीने बिता दिए। विरह-व्यथा की अग्नि में वह इस तरह जल रहीं हैं कि उसे एक-एक क्षण एक-एक वर्ष के समान व्यतीत होता है। एक-एक पहर युग के बराबर हो रहा था।उसका यह समय बीतते न बीतता था। कृष्ण की विरह में गोपियाँ की जो दशा थी वहीं नागमती की भी हो गई थी। सांझ होने पर वह उत्सुकतापूर्वक स्मरण करके अपने पति का मार्ग देखती है। वह कौन-सी घड़ी होंगी जब प्रियतम लौटेगा? मैं प्रियतम के प्रेम में जलकर काली हो गई हूँ। देह में तोले भर मांस भी नहीं रहा। रक्त भी नहीं रहा। विरह में सब शरीर में निचुड़ गया और रत्ती-रत्ती होकर नेत्रों के मार्ग से वह गया। आपकी यह दासी पाँव पकड़कर, हाथ जोड़कर प्रार्थना करती है कि टूटे हुए प्रेम को पुनः जोड़े।

वह बाला रो-रोकर, खीझकर चीत्त हार गयी। पहले तो वह घर-घर के मनुष्यों से प्रियतम के विषय में पूछी, पर अब तो वन के पंछियों से भी उसके विषय में पूछने लगी है।